2005:2006

"कक्षा 6 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धियों का अध्ययन"

D-230

बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल

एम.एड. (प्रारंभिक शिक्षा) परीक्षा

की

आंशिक संपूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघुशोध प्रबन्ध

2005–06

मार्गदर्शक

डॉ. इंद्राणी भादुड़ी

प्रवाचक

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल (म.प्र.)

शोधकर्ता

उमेश उत्तमराव बोटकुले

एम.एड. छात्र

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल (म.प्र.)

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

N.C.E.R.T.

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि उमेश उत्तमराव बोटकुले जो कि क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल में नियमित विद्यार्थी के रूप में अध्ययनरत है, ने एम.एड. (प्रारंभिक शिक्षा) में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने हेतु लघुशोध प्रबन्ध कार्य "कक्षा 6 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धियों का अध्ययन" मेरे मार्गदर्शन में विधिवत् पूर्ण किया है।

प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध कार्य पूर्णतः मौलिक है, जिसे मेहनत, ईमानदारी तथा पूर्ण निष्ठा से किया गया है एवं पूर्व में इस आशय से विश्वविद्यालय में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल की सत्र 2005–2006 की एम.एड. शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा की आंशिक संपूर्ति हेतु प्रस्तुत करने में उपयुक्त तथा सक्षम है।

स्थान : भोपाल
दिनांक : 30 March '06

मार्गदर्शक

डॉ. इन्द्राणी भादुडी
प्रवाचक
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,
एन.सी.ई.आर.टी.
भोपाल (म.प्र.)

आभार–ज्ञापन

प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध "कक्षा 6 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धियों का अध्ययन" की सम्पन्नता का सम्पूर्ण श्रेय मेरी मार्गदर्शक डॉ. इन्द्रानी भादुड़ी (प्रवाचक) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल को है। जिन्होंने निरंतर उचित परामर्श, पर्याप्त निर्देश तथा अनावरत प्रोत्साहन देकर शोधकार्य पूर्ण करने में अमूल्य सहयोग प्रदान किया है। प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध आपके द्वारा शोधकार्य में धैर्य पूर्वक प्रदत्त आत्मीय व्यवहार एवं अविस्मरणीय वात्सल्य पूर्ण सहयोग का प्रतिफल है। जिन्होंने मुझे स्वयं के बहुमूल्य समय में से एक अध्यापक, अभिभावक तथा निर्देशक के रूप में प्रर्याप्त समय दिया है, अतएवं मैं उनका ऋणी हूँ।

मैं आदरणीय प्रोफेसर डॉ. एम.सेन. गुप्त, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल तथा डॉ. व्ही. जी. जाधव अधिष्ठाता, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल डॉ. एस.के. गुप्ता, विभागाध्यक्ष तथा डॉ. खेमराज शर्मा सर, डॉ. खरे सर, डॉ. यू. लक्ष्मीनारायण, डॉ. रमेश बाबू, डॉ. रत्नमाला आर्या, श्री. आनन्द वाल्मिक, श्री. संजय पंडागले, के स्नेहपूर्ण व्यवहार, सहयोग तथा आशीर्वाद हेतु हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे शोधकार्य की सम्पन्नता में मौलिक सहयोग प्रदान किया है।

मैं पुस्तकालय अध्यक्ष श्री पी.के. त्रिपाठी एवं उन समस्त गुरूजनों का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने समय समय पर उचित मार्गदर्शन करके मेरे इस शोधकार्य में सहयोग दिया।

मैं अपने आदरणीय माता–पिता, मित्र तथा शुभचिन्तकों का जीवन पर्यन्त चिरऋणी रहूंगा, जिन्होंने मेरे अध्ययन में महत्वाकांक्षा की पूर्ति हेतु तन, मन, धन से सहयोग तथा आशीर्वाद दिया है।

अन्त में मैं शोधकार्य से संदर्भित विविध चरणों में शोधकार्य में जिन्होंने किसी न किसी रूप में सहयोग प्रदान किया है, उन सभी का सच्चे मन तथा हृदय से आभारी रहूंगा।

Umesh U Botkule

स्थान : भोपाल
दिनांक : 30·03·06

उमेश उत्तमराव बोटकुले
एम.एड. (छात्र)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,
एन.सी.ई.आर.टी.
भोपाल (म.प्र.)

विषय–सूची

रूपरेखा	पृष्ठसंख्या
1. अध्याय प्रथम :	
प्रस्तावना	1-9
1.1 भूमिका	
1.2 शिक्षा माध्यम के रूप में भाषा समस्या	
1.3 प्रारंभिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण	
1.4 द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी का महत्व	
1.5. अध्ययन की आवश्यकता	
1.6 समस्या कथन	
1.7 अध्ययन के उद्देश्य	
1.8 परिकल्पनाएँ	
1.9 शोध में प्रयुक्त चर	
1.10 शोध परिसीमाएँ	
2. अध्याय द्वितीय :	10-13
सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन	
2.1 भूमिका	
2.2 पूर्व में हुए शोध कार्य	
3. अध्याय तृतीय :	14-18
शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया	
3.1 परिचय	
3.2 शोध प्रविधि	
3.3 न्यादर्श का चयन	
3.4 प्रतिदर्श का विवरण	
3.5 उपकरण का निर्माण	

रूपरेखा	पृष्ठसंख्या

3.6 प्रदत्तों का संकलन

3.7 प्रयुक्त सांख्यिकी

4. अध्याय चतुर्थ : 19-35

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.0 परिचय

4.1. (1) भाषा उपलब्धि

4.1.1 (1) लिंग के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना का परीक्षण

4.1.2. (2) अवस्थिति के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना का परीक्षण

5. अध्याय पंचम : 36-41

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 परिचय

5.2 संक्षेपिका

5.3 निष्कर्ष एवं व्याख्या

5.4 सुझाव

5.5 भावी शोध हेतु समस्याएँ

संदर्भ ग्रन्थ सूची

परिशिष्ट

हिन्दी भाषा उपलब्धि परीक्षण

तालिका सूची

तालिका क्रमांक		पृष्ठ क्रमांक
3.1	प्रतिदर्श का विवरण	15
4.1.	बालक एंव बालिकाओं की हिन्दी भाषा उपलब्धियों को दर्शानेवाली 'टी' मूल्य की सार्थकता।	20
4.1.1	हिन्दी भाषा उपलब्धि के विविध घटकों के प्रति बालक एवं बालिकाओं के मध्य 'टी' मूल्य का मान।	21
4.1.2.	शब्दज्ञान के उपघटकों के प्रति बालक बालिकाओं के मध्य 'टी' मूल्य का मान।	23
4.1.3.	वाक्य रचना के उपघटकों के प्रति बालक बालिकाओं के मध्य 'टी' मूल्य का मान।	25
4.1.4.	व्याकरण के उपघटकों के प्रति बालक बालिकाओं के मध्य 'टी' मूल्य का मान।	26
4.1.5.	लेखन के उपघटकों के प्रति बालक बालिकाओं के मध्य 'टी' मूल्य का मान।	27
4.2	ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के प्रति अवस्थिति के मध्य 'टी' मूल्य का मान।	28
4.2.1.	हिन्दी भाषा उपलब्धि के विविध घटकों के प्रति अवस्थिति के मध्य 'टी' मूल्य का मान।	29
4.2.2.	शब्दज्ञान के उपघटकों के प्रति अवस्थिति के मध्य 'टी' मूल्य का मान।	31
4.2.3.	वाक्य रचना के उपघटकों के प्रति अवस्थिति के मध्य 'टी' मूल्य का मान।	33
4.2.4.	व्याकरण के उपघटकों के प्रति अवस्थिति के मध्य 'टी' मूल्य का मान।	34
4.2.5.	लेखन के उपघटकों के प्रति अवस्थिति के मध्य 'टी' मूल्य का मान।	35
5.1	प्रदत्तों का विश्लेषण।	38